बाबा रज्जाल शाह जी

बाबा रज्जाल शाह जी बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। इनके माता पिता इन्हें प्यार से रज्जू, राजा आदि नामों से पुकारते थे। इनके पिता इन्हें मन्दिर या सत्संग में हमेशा साथ रखते थे। बाल्यावस्था में रामायण, गीता पढ़ने और सत्संग करने के जो संस्कार पिता ने इस बालक के हृदय में बोए वही बीज सतत साधना के जल को प्राप्त करके अंकुरित हुए और गुरु सुथरे शाह जी की कृपा से वृक्ष का रूप धारण कर गए। जिस वृक्ष की शीतल छाया के नीचे यात्रियों को आनन्द और शान्ति मिलती।

इनके बारे में एक कथा प्रसिद्ध है कि एक बार रज्जाल जी अपने पिता के साथ मन्दिर गए जहाँ राम कथा हो रही थी। रज्जाल जी ने अपनी जूती बाहर ड्योढ़ी में उतारी और कथा सुनने बैठ गए पर उनका ध्यान कथा में न होकर अपनी नई जूती की तरफ था। पण्डित जी ने रज्जाल जी को फटकारा और कहा कि उनका ध्यान कथा में न होकर बाहर ड्योढ़ी की तरफ है, तो कथा सुनने आने का क्या लाभ? इतने में ही एक कुत्तिया वहाँ आई और रज्जाल जी की जूती मुँह में डालकर ले गई। रज्जाल जी भी उस कुत्तिया के पीछे भागे। थोड़ी दूर जाकर कुत्तिया जूती को वहीं छोड़कर भाग गई।

इस बात को काफी साल बीत चुके थे। रज्जाल जी का मन घर में कम लगता था। साधु संतों की सेवा करना उन्हें अच्छा लगता था। वह जिस साधु संत को देखते उन्हें घर बुला लाते व बिठाकर बड़े प्यार से भोजन खिलाते। इनके घर के बाहर ही एक बड़ा वट वृक्ष था। रज्जाल जी इस वृक्ष के नीचे बैठकर अपनी मस्ती का जीवन व्यतीत करते थे और घण्टों बैठकर प्रभु ध्यान का आनन्द लूटते थे।

एक बार सुथरे शाह जी घूमते हुए इसी वट वृक्ष के समीप पहुँच गए।

प्रभुचिन्तन की तन्मयता और तल्लीनता में डूबे हुए रज्जाल जी के मुख मण्डल पर आनन्द, शान्ति व मस्ती को देखकर सुथरे शाह जी भाव विभोर हो गए। यों तो सुथरे शाह जी के सैंकड़ों शिष्य थे किन्तु रज्जाल जी को देखकर उन्हें लगा कि सुथरे शाही सम्प्रदाय की गुरु गद्दी का वारिस मिल गया।

तब सुथरे शाह जी रज्जाल जी से हँसते हुए बोले -

कथा में तथा वै, सुरत रह गई जुत्ती।
ब्राह्मण बेचारा क्या करे, जुत्ती लै गई कुत्ती।।

रज्जाल जी इतनी पुरानी बात सुनकर दंग रह गए। वह समझ गए कि यह कोई साधारण संत नहीं है अपितु ऐसे संत है जिनकी उन्हें तलाश थी। रज्जाल जी ने दोनों हाथों से सुथरे शाह जी के चरण पकड़ लिए और बोले - 'आप दुखियों के दुख दूर करने वाले है। अन्धकार में भटकने वालों को प्रकाश देते हैं। मैं भी अन्धकार में भटक रहा हूँ कृपया मुझे अपना शिष्य बना लीजिए।'

सुथरे शाह जी परीक्षा लेने के लिए रज्जाल जी से बोले - 'सन्त बनने में क्या रखा है? सन्त तो निखट्टु और आलसी होते हैं। समाज पर बोझा होते हैं। भीख माँग कर खाते हैं।' रज्जाल जी बोले - बाबा, जो भी तुम कहोगे वही करुँगा। भीख भी माँगूगा, पर अपने चरणों से मुझे अलग मत करो। सुथरे शाह जी भी यही चाहते थे। वे रज्जाल जी के माता-पिता से आज्ञा लेकर उन्हें लाहौर ले आए। रज्जाल शाह जी ने सुथरे शाह जी को अपना गुरु धारण कर गुरु चरण धोय व चरणामृत लिया। सुथरे शाह जी ने उन्हें गुरु मन्त्र दे अपना शिष्य बना लिया। सुथरे शाह जी ने बारह वर्ष तक उनकी अनेक परीक्षाएँ ली जिसमें रज्जाल जी खरे उतरे। सुथरे शाह जी ने उन्हें उपदेश देते हुए कहा –

सुथरे शाह की एक ही वाणी,
स्वांस-स्वांस सिमरों सुख मानी।

मानव जीवन की सार्थकता इसी में है कि वे अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को, अपनी हर श्वास को ईश्वर की भक्ति में लगा कर उस प्रभु की प्राप्ति करे जो उसका अन्तिम लक्ष्य है। आपने हिन्दू धर्म की रक्षा भी करनी है। धर्म रक्षा का कार्य संसार में साधु के बराबर गृहस्थाश्रमी कदापि नहीं कर सकता। कारण, गृहस्थ को तमाम चिन्ताएँ लगी रहती हैं। गृहस्थ बन्धन से साधु मुक्त है। अतः हम चाहते हैं कि हमारी इस गद्दी का उत्तराधिकारी भी ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करने वाला हो। सुथरे शाह जी ने उन्हें भागवत की कथा सुनाई कि किस प्रकार उर्वशी ने सम्राट पुरुरवा के चित्त को आकृष्ट कर लिया। वे विषयों के सेवन में इतने डूब गए कि वर्षों की रात्रियाँ बीतती हुई जान न पड़ी। वह अपने राजपाट, मानमर्यादा, प्रिय प्रजा और कर्त्तव्य पालन को तिलांजलि देकर उर्वशी के मोह में बद्ध हो गया और जब वह अप्सरा उन्हें छोड़कर जाने लगी तो वह पागल की भान्ति नग्नावस्था में उसके पीछे-पीछे भाग रहा था। सच है -

किं विद्यया किं तपसा किं त्यागेन श्रुतेन वा।
किं विविक्तेन मौनेन स्त्रीभिर्यस्य मनो हृतम्।।

अर्थात् स्त्री ने जिसका मन चुरा लिया, उसकी विद्या व्यर्थ है। उसे तपस्या, त्याग और शास्त्राभ्यास से कोई लाभ नहीं। उसका एकान्त सेवन एवं मौनव्रत सब व्यर्थ है। रज्जाल जी सुथरे शाह जी की वाणी को बड़े ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। उन्हें अपने अन्दर अपार आत्मविश्वास और ईश्वरीय शक्ति का अनुभव हुआ। तब सुथरे शाह जी ने उन्हें महन्त की उपाधि दी व समस्त शक्तियाँ प्रदान की। उन्हें श्रीमहन्त बाबा रज्जाल शाह जी के नाम से विभूषित किया।

सुथरे शाह जी ने अपने नाम से एक धर्मशाला अमृतसर में स्थापित की। एक धर्मशाला शाह लाहौर शालमी दरवाजे के अन्दर कायम की और एक धर्मशाला पेशावर में कायम की।